Raga of the Month April, 2024

Raga Sanjh / Sanjhki Hindol राग साँझ / साँझकी हिंडोल

" साँझकी हिंडोल " इस राग के नाम से ही पता चलता है कि यह राग हिंडोल का संध्या समय में गाया जाने वाला जवाब है। दोनों रागों का कल्याण थाटमें समावेश किया जाता है। हिंडोल यह मध्य रात्रि के बाद गाया जाने वाला उत्तरांग प्रधान राग है। राग हिंडोल में धैवत वादी और गंधार संवादी है। निषाद का आरोहमें वक्र रूप से प्रयोग होता है। "सां ध" की संगति बार-बार दिखाई जाती है। निषाद का प्रमाण बढ़ने से राग सोहनी की छाया आने का संभव है। कई प्राचीन ध्रुपदोंमें निषाद वर्ज्य किया दिखाई देता है।

राग "साँझकी हिंडोल" का विस्तार मंद्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। उस राग में गंधार वादी और निषाद संवादी माना जाता है। इस राग में धैवतका महत्व कम होता है । राग हिंडोल से अलग रखने के लिए निषाद पर न्यास किया जाता है।

oceanofragas.com इस संकेत स्थलपर उपलब्ध "मूर्च्छना शोध सारणी" का उपयोग करके हमें सांझ की हिंडोल राग की मूर्च्छनाओ से ३ राग मिलते हैं ।

१. गंधार को षड्ज मानकर शोभावरी; **२. धैवत को षड्ज मानकर शिवरंजनी** ; **और ३. निषाद को षड्ज मानकर बैरागी भैरव**

आज के ऑडियो में हम भेंडी बझार घरानेके उस्ताद अमान अली ख़ाँके शिष्य पंडित शिव कुमार शुक्ल से इस राग में दो रचनाएं सुनेंगे ।

आभार : विदुषी किरण शुक्ला, पंडित यशवंत महाले .

इस रागका पूर्ण सादरीकरण यूट्यूब मे SANIDH MUSIC चॅनेल पर उपलब्ध है।

https://www.youtube.com/watch?v=**7**MND_**9**BTzig&t=**845**s

५ - ४- २०२४ (rev.1)

Link to the list of 150+ Raga of the month articles - @ Archive of ROTM Articles

- http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx